Gandhi Programme

B.A. III H
Paper V
M.A. JOHN

Non Violence
(अहिंसा)

अहिंसा, महात्मा गांधी की सर्वप्रसिद्ध विचारधारा है। गांधी जी के अनुसार अहिंसा मनुष्य का स्वाभाविक गुण है। हिंसा के लिये कुछ विशेष परिस्थितियाँ ही उसे मजबूर करती हैं। अहिंसा के द्वारा ही व्यवस्थित समाज की रचना की जा सकती है और मनुष्य जीवन में उन्नति करता है।

Andrews का विचार है कि अहिंसा की अवधारणा में नकारात्मक और सकारात्मक दोनों पक्ष सम्मिलित होते हैं। नकारात्मक दृष्टिकोण से अहिंसा का तात्पर्य ~~उदारतापूर्वक दूसरों को क्षमा करना, त्याग की भावना रखना तथा बुराई को प्रेम और दया से जीतना है।~~ स्वार्थ, विरोध अथवा क्रोध होने पर भी किसी को कष्ट न पहुँचाना अथवा उसपर आघात न करना। सकारात्मक दृष्टिकोण से अहिंसा का अर्थ उदारतापूर्वक दूसरे को क्षमा करना, त्याग की भावना रखना तथा बुराई को प्रेम और दया से जीतना है।

वास्तविकता यह है कि गांधी जी के अनेक पहलू हैं।

अहिंसा को धार्मिक दृष्टिकोण से भी परिभाषित किया जाता है। गांधी के पहले भी अनेक विचारकों ने अहिंसा का संदेश दिया लेकिन परन्तु गांधी जी के विचार अत्यन्त व्यावहारिक और महत्वपूर्ण हैं। उनके अनुसार मन, वचन और कर्म से भी किसी व्यक्ति को हानि पहुँचाना हिंसा है। उनके अनुरूप कुविचार भी

हिंसा का एक रूप है।

अहिंसा का एक पक्ष राजनैतिक भी है। गांधी जी ने अहिंसा को सर्वोच्च राजनैतिक शक्ति के रूप में स्वीकार किया है। उन्होंने सिविल नाफरमानी जैसे शक्तिशाली अहिंसक हथियार का आविष्कार किया। भारत में स्वतन्त्रता के आन्दोलन में अहिंसा के इस हथियार ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। दक्षिण अमरीका में गांधी जी के विचारों के समर्थक किंग मार्टिन लूथर ने रंग भेद के खिलाफ आन्दोलन करके जो सफलता प्राप्त की उसी से अहिंसा का राजनैतिक पक्ष खुल कर सामने आया।

सीता रमैया के अनुसार "अहिंसा प्रजातन्त्र का दृश्य और अदृश्य हथियार है। प्रजातन्त्र में व्यक्ति अहिंसा से जितना अधिक प्रभावित होंगे उतना कम प्रेरित होंगे।"

अहिंसा का एक पक्ष आर्थिक भी है जो आर्थिक बेईमानी को भी एक प्रकार की हिंसा मानता है। उन्होंने यह विचार दिया कि संसार में जितनी भी महत्वपूर्ण वस्तुएं हैं उनपर निजी स्वार्थ को पूरा करने के लिये व्यक्तिगत स्वामित्व बनाये रखना भी एक प्रकार की हिंसा है। उनके अनुसार वर्ग संघर्ष या वर्गवाद भी आर्थिक हिंसा का एक रूप है। उनके अनुसार पूंजीपति अपनी आवश्यकता से अधिक जो भी धन रखते हैं उसपर उन लोगों का अधिकार है जिनको उसकी आवश्यकता है। जनहित में इसे खर्च नहीं करना भी

हिंसा है। अहिंसा के रास्ते पर चलते हुए हमें उतना ही धन अथवा वस्तुएं रखने का अधिकार है जितनी हमें आवश्यकता है।

अहिंसा का अति महत्वपूर्ण पक्ष सामाजिक पक्ष माना जाता है। इस संदर्भ में अहिंसा का अर्थ, सत्य, प्रेम और त्याग के मार्ग पर चलना है। इस दृष्टिकोण से अहिंसा के द्वारा ही परिवार और समाज को संगठित किया जा सकता है। अहिंसा एक सामाजिक गुण है तथा इसका विकास उसी तरह होना चाहिये जिस प्रकार हम व्यक्ति में अनेक दूसरे सामाजिक गुणों को विकसित करने का प्रयास करते हैं। गाँधी जी ने अहिंसा को नैतिकता तथा आध्यात्मिकता की सर्वोच्च शक्ति माना है। उन्होंने अहिंसा के तीन स्वरूपों की भी चर्चा की है। पहला जाग्रत अहिंसा दूसरा औचित्यपूर्ण अहिंसा तथा तीसरा निष्क्रिय अहिंसा के रूप में जाना जाता है।

जाग्रत अहिंसा में व्यक्ति अपनी अन्तरात्मा पर काम करता है। अपनी अन्तरात्मा पर व्यक्ति हिंसा का आचरण करते हैं। औचित्यपूर्ण अहिंसा उसे कहते हैं जिसमें व्यक्ति आवश्यकता पड़ने पर इसे एक नीति के रूप में काम में ला सकता है।

निष्क्रिय अहिंसा अहिंसा का न तो सबसे प्रभावपूर्ण रूप है और ना ही वास्तविक रूप। इसे डरपोक और कायर लोगों की अहिंसा कहा जाता है। इसमें कायर लोग अपनी दुर्बलता को छुपाते हैं तथा गलत काम का विरोध न करने को भी अहिंसा समझते हैं

गाँधी जी के अनुसार मानव इतिहास के सभी कालों में समाज में अहिंसा एक प्रभावशाली घटना रही है। इसलिए इसके सारा विश्व के प्रत्येक हिंसक व्यवस्था पर विजय पाया जा सकता है। राज्य की सत्ता भी एक प्रकार की संगठित हिंसा है। इसे शक्ति तथा हथियार से नहीं बचाया या बचाया जा सकता है इसके लिए भी अहिंसा की आवश्यकता होती है॥